डॉ. सतीश "बब्बा"

चित्रकूट, उत्तर प्रदेश

मन का समर्पण

तूने तन को झुकाया,
मन को नहीं,
तन को तूने,
किया समर्पित,
मन का समर्पण,
किया ही नहीं!

इंद्रजाल की,
तू जादूगरनी,
कैसे यकीन करूं,
तू है विष भरी!

भ्रम में फंसा मन,
हृदय तल मैला,
तन की सुंदरता को दिखाया,
मन का मिलन,
तेरे लिए,
जरूरी नहीं!

तो फिर क्यों,
तू पाएगी मुझे,
मैं तो सच में,
प्रेम दिवाना,
सदियों से,
प्रेम पियासा हूं!

तू नहीं है,
रस भरी,
तू सच में है,
विष भरी!

तू छोड़ कपट जंजाल,
छोड़ दे देह की प्यास,
आजा मेरे अंक में,
मन का समर्पण लेकर!!